‘हमने देखी है एसएचजी की ताकत’

पटना, जागरण ब्यूरो : एसके मेमोरियल हाल में शनिवार को आयोजित स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) से जुड़ी महिलाओं के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एसएचजी से जुड़े अपने कई अनुभवों को भी शेयर किया। उन्होंने कई बार कहा-हमने खुद देखी है एसएचजी की ताकत।

अपनी एक यात्रा के सिलसिले में वह मुजफ्फरपुर में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के बीच थे। उन महिलाओं ने बताया कि गांव के एक दबंग ने समूह की एक महिला की जमीन पर कब्जा कर लिया। पुरुष डर के मारे नहीं गए और स्वयं सहायता समूह की महिलाएं एकजुट होकर वहां पहुंच गयीं। जमीन पर कब्जा करने वाले को खदेड़ दिया। उसी समय मन में यह ख्याल आया कि व्यापक स्तर पर इसका गठन कराया जाए। इसी तरह पूर्णिया में एक बार उन महिलाओं के समूह के बीच पहुंचे जो पीडीएस का दुकान संभाल रहीं थीं। हमने पूछा कि कितनी आमदनी हो जाती है। समूह की महिलाओं ने कहा-तीन-चार हजार बच जाता है। सोच लीजिए। बिहार अनोखा प्रदेश है। यहां किसी भी तरह की मांग का आंदोलन हो सकता है। पीडीएस डीलर भी नौकरी मांगते हैं। और ये एसएचजी की महिलाएं ठीक से अनाज और तेल बांटते हुए समूह के लिए पैसा भी बचाती हैं। अब तो एसएचजी कि इन महिलाओं की मेहनत से बिहार इतना सुंदर बनेगा कि लोग बाहर से देखने आएंगे। मेला लग जाएगा। बहुत लोगों का कलेजा फटता है। दिलजलों का कलेजा फटते-फटते ठंडा हो जाएगा।

जीविका भवन भी बनाएंगे : नीतीश मिश्रा

पटना, जागरण ब्यूरो : ग्रामीण विकास मंत्री नीतीश मिश्रा ने कहा कि जिस तरह से ग्रामीण इलाकों में स्वयं सहायता समूह में महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही है उसे ध्यान में रख सरकार जीविका भवन बनाए जाने पर सोच रही है। एनआरएलएम में इसका प्रावधान भी है। हमने वैसे एक लाख स्वयं सहायता समूहों को चिन्हित किया है जो पहले से ग्रामीण विकास विभाग के तहत चल रहे थे। उन्हें भी जीविका के माध्यम से मिलने वाली मदद मिलेगी।

गरीब महिलाओं को दिया गया पैसा डूबेगा नहीं : मोदी

पटना, जागरण ब्यूरो : जीविका के बढ़ते कदम कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कार्यक्रम में उपस्थित बैंकरों को कहा कि वह इस बात का इत्मीनान रखें कि स्वयं सहायता समूह की गरीब महिलाओं को दिया गया पैसा डूबेगा नहीं। तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश जैसे राज्यों की चर्चा करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वहां बैंकों द्वारा स्वयं सहायता समूह को दस हजार करोड़ रुपये दिया जाता है। बिहार में भी पर्याप्त संभावना है। उन्होंने कार्यक्रम में पहुंचीं स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को कहा कि तीन बातों का जरूर ख्याल रखें- घर में शौचालय बनवाएं, लड़कियों को स्कूल भेजें और हर हाल में अपनी बेटी की शादी अठारह वर्ष से कम उम्र में न करें।

आत्मबल का प्रतीक बन गयी हैं एसएचजी की महिलाएं : परवीन

पटना, जागरण ब्यूरो समाज कल्याण मंत्री परवीन अमानुल्लाह ने कहा कि स्वयं सहायता समूह लाखों महिलाओं के लिए आत्मबल व निष्ठा के प्रतीक के रूप में है। उन्होंने कहा कि यह बहुत बड़ी बात है कि महिलाएं अपने हक के लिए आवाज उठा रही हैं और अपने लिए कार्य योजनाएं बना रही हैं।

पूरे उत्साह के साथ समारोह में पहुंची एसएचजी से जुड़ीं महिलाएं जागरण

फैक्ट शीट

- जीविका समुदाय के साथ मुख्यतः संस्थागत विकास, वित्तीय समावेशन, सामाजिक समावेशन, जीविकोपार्जन, क्षमता संवर्द्धन और कौशल विकास पर काम करती है।
- जीविका विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे मनरेगा, आरएसबीवाई, पूर्ण स्वच्छता अभियान व जनवितरण प्रणाली के सुचारू क्रियान्वयन के लिए विभिन्न सरकारी विभागों के साथ समन्वय करती है। जीविका के 102 ग्राम संगठनों द्वारा जन वितरण प्रणाली का संचालन किया जा रहा है।
- जीविका नालंदा, खगड़िया और पूर्णिया जिले में महिला किसान उत्पादक कंपनियां बनाकर उत्पादन व व्यापार की गतिविधियों को आगे बढ़ा रही है। 250 से अधिक दुग्ध उत्पादन समितियों से जुड़े लगभग 12 हजार सदस्य इससे अर्थोपार्जन कर रहे हैं।

बढ़ते कदम

हम चाहें तो दुनिया बदल दें

पटना: पूर्णिया से पहुंचीं स्वयं सहायता समूह से आगे बढ़ीं रबीना खातून ने एसएचजी से जुड़े अपने अनुभव मंच से शेयर किए। उन्होंने कहा कि पहले यह नहीं जानते थे कि बचत क्या है पर आज बचत ही पूंजी है। उनके गांव में सोलह समूह बन हैं। एक बार गांव में डायरिया फैला तो सभी ने मिलकर गांव की सफाई की। ग्राम संगठन बनाकर 40-50 क्विंटल अनाज खरीद लिए और खाद्य सुरक्षा की समस्या हल कर ली। गांव में सोलर लाइट भी हमलोगों ने लगवाया। श्रीविधि से खेती की जिससे उपज दोगुना-तीन गुना हो गया।

हमरो सपना रहै कि हमर बच्चा..

पटना : मुजफ्फरपुर के बोचहां प्रखंड से पहुंची मेंहदी जीविका, काजल जीविका और दीपमाला जीविका संगठन से जुड़ी नीलम ने कहा कि-हमरो सपना रहै कि हम्मर बच्चा बढ़िया स्कूल में पढ़ै और बढ़िया खाय पर पैसा रहै नय। दो सौ रुपया के लिए महाजन के पास जाते थे। वहां जेवर, जमीन और जानवर गिरवी रखने की बात होती थी। गांव में हम सब मिलकर स्वयं सहायता समूह बनाये और आज हमारे ग्राम संगठन के खाता में पंद्रह लाख रुपया है। पैसा से पैसा कमइने छिऐ।

चावल दाल शांति से खाए छथिन

पटना : खगड़िया के अलौली से पहुंची लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह की मिथिलेश ने कहा कि पहले दीदी सब के खाना नय पूरे रहन। रोजगार नय रहन। समूह बना के हमलोग ग्राम संगठन बनाये। डीलर वाला काम किए। श्रीविधि से खेती किए आज ग्राम संगठन के पास दो लाख रुपया है। माइक्रो प्लानिंग कर हमलोग बाजार से थोक में चावल-दाल लाते हैं। सब शांति से खाए छतिन चावल-दाल।